राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास में सह–शैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Role of Co-Curricular Activities in Moral Values and Personality Development of Govt. and AdarshVidya Mandir School Students.

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी–एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्ता :

पूराराम मेघवाल

iase
Deemed
university

शोध निर्देशक :

डॉ. अजयकृष्ण तिवाड़ी

प्रवक्ता (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

सरदारशहर, जिला–चूरू (राजस्थान) - 331401

2016

<u>शोध – प्रारूप</u>

1.	शोधकर्ता का नाम	:	पूराराम मेघवाल
2.	संस्थान का पता	:	उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
3.	शोध विषय	:	राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास में सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन। **A Comparative Study of Role of Co-Curricular Activities in Moral Values and Personality Development of Govt. and AdarshVidya Mandir School Students.**

1 <u>प्रस्तावना</u> :–

विद्या भारती का पूरा नाम ''विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान'' है। यह शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी अशासकीय संस्था है। इसके अन्तर्गत भारत में लगभग 19000 शैक्षिक संस्थान कार्य रहे हैं। इसकी स्थापना सन् 1977 में हुई थी। विद्या भारती, शिक्षा के सभी स्तरों – प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च पर कार्य कर रही है। इसके अलावा यह शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान करती है। इसका अपना ही प्रकाशन विभाग है जो बहुमूल्य पुस्तकें, पत्रिकाएँ एवं शोध पत्र प्रकाशित करता है।

आज लक्षद्वीप और मिजोरम को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में 86 प्रांतीय एवं क्षेत्रीय समितियाँ विद्या भारती से संलग्न है। इनके अंतर्गत कुल मिलाकर 23320 शिक्षण संस्थानों में 147634 शिक्षकों के मार्गदर्शन में 34 लाख छात्र–छात्राएँ शिक्षा एवं

संस्कार ग्रहण कर रहे हैं। इनमें से 49 शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान एवं महाविद्यालय, 2353 माध्यमिक एवं 923 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 633 पूर्व प्राथमिक एवं 5312 प्राथमिक, 4164 उच्च प्राथमिक एवं 6127 एकल शिक्षक विद्यालय तथा 3679 संस्कार केन्द्र है। आज नगरों और ग्रामों में, वनवासी और पर्वतीय क्षेत्रों में झुग्गी-झोंपड़ियों में, शिशु वाटिकाएं, शिशु मंदिर, विद्या मंदिर, सरस्वती विद्यालय, उच्चतर शिक्षा संस्थान, शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र और शोध संस्थान है। इन सरस्वती मंदिरों की संख्या निरंतर बढ़ रही है और आज विद्या भारती भारत में सबसे बड़ा गैर-सरकारी शिक्षा संगठन बन चुका है।

विद्या भारती की अभिनव पंचपदी शिक्षण पद्धति प्राचीन भारत की शिक्षण प्रणाली एवं आधुनिक युग की शिक्षण विधियों को अच्छी एवं उपयोगी बातों को लेकर विकसित की गई है। इस पद्धति में प्रत्येक कालांश में शिक्षण कार्य ब्रह्मानाद एवं एक मिनट के ध्यान से प्रारम्भ किया जाता है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है कि एक कालांश में अध्ययन किये गये विषय के पश्चात् दूसरे विषय का शिक्षण आरम्भ करने से पूर्व मस्तिष्क को अवकाश एवं शान्ति की आवश्यकता है तभी छात्र द्वारा उस विषय का अर्जित ज्ञान उसकी स्मृति का अंग बन सकता है। एक मिनट के ध्यान एवं ऊँकार की ध्वनि से मस्तिष्क शान्त एवं एकाग्र होता है एवं दूसरे विषय के अध्ययन हेतु तत्पर होता है।

इस पद्धति के पांच पद निम्नलिखित है - 1. अधीति, 2. बोध, 3. अभ्यास, 4. प्रयोग, 5. प्रसार (स्वाध्याय एवं प्रवचन)

ये सीखने-सिखाने के मनोवैज्ञानिक क्रम हैं। इन पदों को सभी पाठ्य विषयों के शिक्षण हेतु सभी कक्षाओं के छात्रों के लिए अपनाया जा सकता है।

अतः शोधकर्ता ने राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास में सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका के बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन कर सोचा कि -

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का क्या प्रभाव पड़ता है? आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में

अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का क्या प्रभाव पड़ता है? राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का क्या प्रभाव पड़ता है? आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का क्या प्रभाव पड़ता है?

उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकर्ता ने ***''राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास में सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन''*** विषय पर शोध करने का निर्णय लिया।

2. <u>शोध का महत्व</u> :-

सहशैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा बालक में अनेक गुणों यथा अनुशासन, मर्यादा, संयम, नियमितता, स्वच्छता, शिक्षकों के प्रति आदर की, भावना, विद्यालय एवं राष्ट्रीय सम्पति के प्रति सुरक्षा एवं समाज सेवा की भावना, साथियों के प्रति कल्याण की भावना, श्रमशीलता एवं सहयोग की भावना आदि गुणों का विकास होता है। सहशैक्षिक कार्यक्रमों को विद्यालयी जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। इन कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न वातावरण से आये बालकों में सहयोग, सह अस्तित्व भावना का विकास किया जा सकता है। शिक्षा शास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने विद्यालयी पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पाठ्यक्रम को भी महत्वपूर्ण स्थान व सम्मान दिया है।

बालक ही हमारी आशाओं को केन्द्र है वही हमारे देश, धर्म एवं संस्कृति का रक्षक है, उसके व्यक्तित्व के विकास में हमारी संस्कृति एवं सभ्यता का विकास निहित है, आज का बालक ही कल का कर्णधार है, बालक का नाता भूमि एवं पूर्वजों से जोड़ना, यह शिक्षा का सीधा, सरल तथा सुस्पष्ट लक्ष्य है, शिक्षा और संस्कार द्वारा हमें बालक का सर्वांगीण विकास करना है।

भारत की भावी सुरक्षा, कल्याण, समृद्धि एवं सम्पन्नता वास्तव में उन्हीं लोगों पर अवलम्बित है जो हमारे विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। किसी समाज या देश का पुनः निर्माण कर उसको प्रगति एवं उन्नति के पथ पर

अग्रसर करने के लिए अति आवश्यक है कि विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाए। शिक्षा निःसन्देह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास करने का प्रबलतम साधन है लेकिन वर्तमान में इसके स्वरूप को राष्ट्रीय विकास एवं राष्ट्रीय आकांक्षाओं पर आधारित करने की आवश्यकता है।

विद्यार्थी अवस्था भावी जीवन की आधारशिला है। यदि नींव सुदृढ़ है तो उस पर प्रासाद भी भव्य एवं चिरस्थायी बन सकेगा। जिस प्रकार किसी वृक्ष का बाल्यावस्था में सम्यक् चिंतन होता है, वह भविष्य में पल्लवित और पुष्पित होता हुआ एक न एक दिन संसार को सौरभमय अवश्य बना देता है, ठीक उसी प्रकार विद्यार्थी को सफलता प्राप्त करने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है उन गुणों की प्राथमिक पाठशाला विद्यार्थी जीवन ही है। ''गुणैर्हि सर्वत्र पदं निधीयते'' अर्थात् गुणों से ही मनुष्य हर जगह ऊँचा पद प्राप्त करता है। शिक्षा ही वह कोष है जिसमें अमूल्य गुणरूपी रत्न विद्यमान हैं। शिक्षा के माध्यम से उन गुणों को पल्लवित एवं संचारित कर दिया जावे तो विद्यार्थी स्वयं, परिवार, समाज और देश के नव निर्माण में एक अच्छे एवम् प्रभावी नागरिक की भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

विद्या भारती द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा गैर सरकारी संगठन है। विद्या भारती संघ परिवार का एक अंग है। विद्या भारती के तहत् 30000 शिक्षण संस्थान संचालित होते हैं। विद्या भारती शिशुवाटिका, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, वरिष्ठ माध्यमिक, संस्कार केन्द्र, एकल विद्यालय, पूर्ण एवं अर्द्ध आवासीय विद्यालय और महाविद्यालयों के छात्रों के लिए शिक्षा प्रदान करता है।

विद्या भारती द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय द्वारा शिक्षा का लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व में निखार और उसको श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन यह केवल शिक्षा के माध्यम से ही नहीं होता वरन् संस्कार का पक्ष भी महत्वपूर्ण है। घर के परिवेश से निकलकर जब बालक विद्यालय में जाता है, तब वह पुस्तकों के माध्यम से और

शिक्षक के माध्यम से अपने गौरवशाली अतीत, इतिहास, संस्कृति व परम्पराओं सहित विविध विषयों में जानकारी प्राप्त करता है। पाठ्य पुस्तकों में वर्णित विषयों को समझाने का काम शिक्षक करते हैं। इसलिए शिक्षक भी बालक के चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण में महती भूमिका का निर्वाह करते हैं। विद्यालय ही सर्वाधिक उपयुक्त स्थल है जहाँ बालक के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। अतः शिक्षा और संस्कृति के सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने हेतु विशेष प्रयास यहीं से आरम्भ किये जा सकते हैं।

''व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता उसकी एकता है। व्यक्ति का बाह्य आचरण, उसकी जन्मजात तथा अर्जित वृतियों, उसकी आदतें और स्थायी भाव, उसके आदर्श और जीवन के मूल्य ये सब मिलकर एक ऐसे प्रमुख स्थाई भाव या आदर्श को जन्म देते हैं, जो मनुष्य के व्यक्तित्व का प्रमुख आधार है।''

व्यक्तित्व, व्यक्ति के सभी पक्षों का एक विशिष्ट संकलन होता है, जो उसके सम्पूर्ण रूप को प्रदर्शित करता है। कुछ पक्ष अन्य की अपेक्षा अधिक विशिष्टता लिये हुए होता है जैसे- दूसरों के साथ आपका आचरण, वेशभूषा, प्रेरणा और दूसरों की दृष्टि से आपकी नैतिकता और सदाचार की मात्रा आदि। आपकी संवेदन और प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रियाओं, सीखने की क्षमता, स्मरण एवं तर्क शक्ति और आपकी प्रेरक प्रक्रियाओं के रूप को पृष्ठभूमि में डाल देते हैं। साधारणतया व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के आकार, डील-डौल, रंग-रूप तथा उसका दूसरे व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव से लगाया जाता है।

नैतिक मूल्यों ने समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। नैतिक मूल्य समाज की वह आधार–भूमि हैं जिस पर सभ्यता और संस्कृति का सुन्दर महल प्रतिष्ठित होता है। मूल्य व्यक्ति की सोच और समाज की संरचना के साथ–साथ बदलते रहते हैं। समाज में सदा से ही मूल्यों का सृजन एवं संहार होता रहा है, लेकिन मूल्यहीनता की स्थिति कभी भी उत्पन्न नहीं होती है। युग परिवर्तन के

साथ–साथ पुराने मूल्यों का स्थान नये मूल्य लेते हैं और मूल्यों की सार्थकता सदैव बनी रहती है। नैतिक मूल्यों का हमारे जगत् से सदैव सम्बन्ध रहा है तथा भविष्य में भी लगातार रहेगा। जब तक मानव–सभ्यता एवं संस्कृति का अस्तित्व रहेगा, नैतिक मूल्यों की उपयोगिता भी बराबर बनी रहेगी।

वर्तमान में समाज में मूल्यों का हनन होता जा रहा है, व्यक्ति स्वार्थी बन गया है। विद्यार्थियों में मूल्यों जैसे– दया, सहानुभूति, प्रेम, त्याग, समर्पण, सहयोग, अहिंसा, कर्तव्यपरायणता आदि का विकास हो जिससे वे आदर्श नागरिक बन सकें। अतः इस हेतु गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए मूल्यों की शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिये। गुणवत्तायुक्त शिक्षा विद्यार्थियों के उत्थान के लिये है। अतः विद्यार्थियों को अपना लक्ष्य निर्धारित कर तन–मन से शिक्षा ग्रहण करनी है। इसके लिये उन्हें टी. वी. संस्कृति से मुक्त होकर 'अध्ययन संस्कृति' अपनानी होगी, सद्साहित्य की ओर झुकाव करना होगा एवं विद्यालय में नियमित उपस्थित होना होगा। उन्हें अपने अर्जित ज्ञान के पुनर्बलन और आत्मीकरण के लिये आत्मविश्वास के साथ अध्ययन व अभ्यास करना होगा ताकि परीक्षा परिणाम उत्कर्षोन्मुख रह सके। वस्तुतः शिक्षा किसी भी राष्ट्र का मेरुदण्ड होती है, वह अतीत की उपलब्धियों, वर्तमान का यथार्थ एवं भविष्य की आलोकमय चेतना की संवाहक होती है। शिक्षा राष्ट्र रूपी शरीर का हृदय भी है, जिसके द्वारा ज्ञान रूपी स्वस्थ रक्त का संचार किया जाता है। ऐसी स्थिति में हमारे आदर्श मूल्यों के विकास, संरक्षण एवं हस्तान्तरण में यह अपनी सर्वोत्तम भूमिका प्रस्तुत कर सकती है।

इस प्रकार शोधकर्ता ने वर्तमान में सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका को एक विद्यालय के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण माना है, अतः शोध की समस्या ***''राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास में सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन''*** शीर्षक से स्पष्ट की गई है।

3. अध्ययन का औचित्य :-

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति का व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्य उसके सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करते हैं, इस कारण प्रत्येक स्तर पर चाहे वह विद्यार्थी प्राथमिक हो, उच्च प्राथमिक हो, माध्यमिक हो या उच्च माध्यमिक स्तर हो, उसके व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्यों में श्रेष्ठता लाने का प्रयास होना चाहिए। यह सब तभी संभव हो सकेगा जब विद्यालयों में चलने वाले सहशैक्षिक कार्यक्रमों में वह पूरी निष्ठा से भाग लें। वह अच्छे व्यक्तित्व के कारण ही अच्छे मूल्यों को ग्रहण करेगा और समाज में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकेगा। आज विश्व की सबसे प्रमुख समस्या को इस प्रायोजना का विषय बनाया गया है। शोधकर्ता ने इसी भावना से राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों का अध्ययन किया और यह पाया कि व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्यों के संदर्भ में आज वैज्ञानिक, शिक्षाशास्त्री, समाजशास्त्री, दार्शनिक, राजनेता सभी चिन्तित क्यों हैं? वर्तमान में समाज में मूल्यों का क्षरण बढ़ रहा है, जिससे विद्यार्थियों का व्यक्तित्व कुण्ठित हो रहा है, उनमें विकार पैदा हो रहे हैं, मानवता का अस्तित्व कम होता जा रहा है, इसलिए इस शोध प्रायोजना का पूर्ववर्ती अध्ययनों से सम्बन्ध स्थापित करने में उसने राष्ट्रस्तरीय सर्वेक्षण, प्रतिवेदनों और ग्रंथों का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने पाया कि प्रस्तुत समस्या पर आज तक कोई कार्य नहीं हुआ है, अतः इस अध्ययन के निष्कर्ष वर्तमान समाज व बच्चों को एक नई दिशा देने में मील का पत्थर साबित होंगे, ऐसा शोधकर्ता का मानना है।

किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

4. अध्ययन के उद्देश्य :-

1. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना।
3. राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना।
5. आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना।
6. राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. अध्ययन की परिकल्पनाऐं :-

1. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
2. आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
3. राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का परस्पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
4. राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
5. आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
6. राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का परस्पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
7. राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्यों पर सहशैक्षिक कार्यक्रमों का परस्पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है

6. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

1. **डॉ. पारीक, ममता (2003) ''बौध शिक्षा समिति एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सृजनशीलता, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।''** शीर्षक पर अपना पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य 1000 विद्यार्थियों पर किया एवं निष्कर्ष रूप में पाया कि बोध शिक्षा समिति एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों में अंतर पाया जाता है। बोध शिक्षा समिति एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की नम्यता, मौलिकता, व्यक्तित्व, सहजप्रवाह में अंतर पाया गया। बोध शिक्षा समिति में अध्ययनरत छात्रों एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों की सृजनशीलता, व्यक्तित्व, सहजप्रवाह, मौलिकता में अंतर पाया गया।[1]

2. **श्रीवास्तव, सुहासिनी (2004) ''समान सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति वाले हिन्दी और अंग्रजी माध्यम वाले विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।''** शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य 840 विद्यार्थियों पर किया और निष्कर्ष में पाया कि बालक–बालिकाओं के जीवन मूल्यों की इस तुलना में मध्यमान के आधार की सार्थकता सभी युग्मों में नगण्य ही पाई गई। देशभक्ति जीवन मूल्य हिन्दी माध्यम के दोनों समूहों में प्रथम वरीयता पद पर पाया गया। अंग्रेजी माध्यम के दोनों वर्गों में आर्थिक मूल्य को अन्तिम वरीयता प्राप्त हुई। स्वास्थ्य सम्बन्धी जीवन मूल्य के सभी वर्गों में तारतम्यता अन्तिम स्थान पर पायी गयी।[2]

3. **वर्मा, रचनामोहन (2004) ''ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विशेषक और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''** विषय पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य 960 विद्यार्थियों पर किया। अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त

[1] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जुलाई–दिसम्बर 2003) पृष्ठ सं.–105

[2] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जुलाई–दिसम्बर 2004) पृष्ठ सं. 25

किया कि व्यक्तित्व की भूमिका विशेषकों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में शहरी छात्र अधिक प्रबल व्यक्तित्व के पाए गए। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में कम प्रतिभाशाली व अधिक प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अन्तर्मुखी व्यक्तित्वों की श्रेणी में अधिक महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।[3]

4. **अग्रवाल, सुभाष चन्द्र एवं वर्मा कल्पनाथ (2005) ''सरस्वती विद्या भारती एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन।''** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि सरस्वती विद्या मंदिर के विद्यार्थियों एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों के ईमानदारी, सच्चाई, मानवता नामक नैतिक मूल्यों को लेकर दोनों वर्गों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उक्त अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अनुसंधानकर्त्ता ने सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.) द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु कई परीक्षण तथा टी टेस्ट का प्रयोग किया।[4]

5. **कपूर, अर्चना एवं श्रीवास्तव, निधि (2008) ''कार्यरत महिलाओं के वैवाहिक/ सामाजिक समायोजन का बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व पर प्रभाव।''** शीर्षक पर प्रायोजना स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष में पाया कि उच्च वैवाहिक सामाजिक समायोजन वाली कार्यरत महिलाओं की बालिकाओं के व्यक्तित्व में संवेगात्मक स्थिरता, अहम् की भावना, वास्तविकता का सामना करना, धैर्य क्रियाशीलता, विचारशीलता, समंजनशीलता, आक्रामकता, मर्यादा, उत्साह आदि गुण बालकों की अपेक्षा अधिक पाये गये। व्यक्तित्व कारक सम्बन्धी गुण (संवेदनशीलता, अत्यधिक सुरक्षा की भावना एवं

---

[3] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जुलाई-दिसम्बर 2004) पृष्ठ सं.5-9

[4] अग्रवाल, सुभाषचन्द्र एवं वर्मा, कल्पनाथ, ''सरस्वती विद्या मंदिर एवं अनुदानित विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक-अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भा.शि. शोध संस्थान, लखनऊ, वर्ष-24, अंक-2, जुलाई-दिसम्बर 2005

नाजुक (प्रवृति) बालकों में बालिकाओं की अपेक्षा उत्तम स्तर के पाये गये। अन्य व्यक्तित्व कारकों में कोई सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी अर्थात् व्यक्तित्व कारक, H.H.J.N. एवं Q-4 सम्बन्धी गुण–अनुराग क्षुब्धता, उदासीनता, गम्भीरता, शान्त प्रवृत्ति, आत्म–विश्वास, आत्म–संयम, साहस, सामान्य स्तर पर विकसित पाये गये।[5]

6. **सिंह, सारनाथ एवं अनिल कुमार (2008) ''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन मूल्यों की तुलना।''** शीर्षक पर प्रायोजना शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष में पाया कि धार्मिक, सामाजिक, प्रजातांत्रिक, सौन्दर्यात्मक, बौद्धिक, सुख–प्रवृत्ति, शक्ति–सत्ता एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों के सन्दर्भ में छात्रों एवं छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। माध्यमिक स्तर की छात्राओं में आर्थिक मूल्य का स्तर छात्रों की तुलना में अधिक है। माध्यमिक स्तर के छात्रों में स्वास्थ्य संबंधी मूल्य छात्राओं की तुलना में अधिक है।[6]

7. **कपूर, अर्चना (2009) ''पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव।''** शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि सकारात्मक पारिवारिक परिवेश में रहने वाले बालक एवं बालिकाओं के आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, परिवार प्रतिष्ठा मूल्य तथा सुखवादी मूल्यों में सांख्यिकीय दृष्टि से मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक मूल्यों की तुलना करने पर यह पाया गया कि बालिकाओं में सामाजिक मूल्य बालकों की अपेक्षा अधिक उन्नत है। बालकों के प्रजातांत्रिक मूल्य बालिकाओं की अपेक्षा अधिक विकसित पाये गये। ज्ञानात्मक मूल्यों के सन्दर्भ में पाया गया कि

---

[5] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जनवरी–जून 2009) पृष्ठ–95

[6] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जुलाई–दिसम्बर 2008) अंक–2, पृष्ठ सं. 43-48

बालिकाएं बालकों की अपेक्षा ज्ञानात्मक मूल्यों को अधिक महत्व देती हैं। बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में प्रभुत्व मूल्य अधिक विकसित पाये गये।[7]

8. **शर्मा, अरूणा (2009) ''विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्त्वि मूल्यों एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका का अध्ययन।''** शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों की अपेक्षा भाग लेने वाले छात्रों के व्यक्तित्व मूल्यों की सक्रियता मात्रा अधिक है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों में उक्त विशेषताएं विपरीत पायी गई। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाली छात्राओं की अपेक्षा भाग लेने वाली छात्राएं अधिक सक्रिय, उत्साही, प्रभुत्ववादी, विषाद रहित, संवेगात्मक रूप से स्थिर, उच्च व्यक्तित्व स्तर वाली पायी गई। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाली छात्राएं निष्क्रिय, निरुत्साही, दब्बू प्रवृत्ति, अविश्वासी, विषादयुक्त व निम्न व्यक्त्वि स्तर वाली पाई गई। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों की अपेक्षा भाग लेने वाले छात्रों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक मूल्य की मात्रा अधिक पायी गई तथा सौन्दर्यात्मक व सामाजिक मूल्यों की मात्रा कम पायी गई। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों में उक्त मूल्यों की मात्रा इसके विपरीत पायी गई।[8]

9. **रामावतार (2014) ''विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व, समायोजन, मनोबल एवं कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन।''** विषय पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य करते हुए निष्कर्ष में पाया कि राजस्थान राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों ने व्यक्तित्व के ''आत्मसम्प्रत्यय, मिजाज एवं समायोजन''

---

[7] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जुलाई–दिसम्बर 2009) पृष्ठ सं. 21

[8] शर्मा, अरूणा (2009) पी–एच.डी. उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

आयामों पर अधिक बल दिया जबकि विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों ने ''अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी, आत्मनिर्भरता एवं दुश्चिन्ता'' आयाम पर अधिक बल दिया। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण एवं विधि महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का स्तर लगभग समान होता है।[9]

7. समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

(A) व्यक्तित्व विकास :–

कैम्फ के अनुसार :– ''व्यक्तित्व आदत की उन व्यवस्थाओं का समन्वय है, जो वातावरण के साथ व्यक्ति के विशिष्ट अभियोजन की प्रतिनिधित्व करता है।''[10]

म्यूरहैड के अनुसार :– ''व्यक्तित्व में सम्पूर्ण व्यक्ति का समावेश होता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के गठन, रूचि के प्रकारों, अभिवृत्तियों, व्यवहारों, क्षमताओं, योग्यताओं और प्रवीणताओं का सबसे निराला संगठन है।''[11]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व एक अति जटिल धारणा है, इसके अन्तर्गत मनुष्य के सब प्रकार के आन्तरिक एवं बाहरी गुणों का समावेश होता है। व्यक्ति व्यवहार से जो कुछ भी होता है वह सब उसके व्यक्तित्व का ही प्रतीक है। व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का संतुलन है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार–प्रतिमान और इनकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है। वास्तव में व्यक्तित्व उस ढंग को कहते हैं जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अनुकूलन करता है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं तथा तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है जिसके आधार पर

---

[9] रामावतार (2014) पी–एच.डी., उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

[10] भाई योगेन्द्रजीत (1967) ''विकासात्मक मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ.सं.709

[11] भटनागर, सुरेश (1995-96)''शिक्षा मनोविज्ञान'' आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ पृ.सं.8

वह किसी समस्या को समझता है तथा उसका समाधान करता है। व्यक्तित्व की महत्ता को देखते हुए विद्यार्थियों के सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण करना आज की महत्ति आवश्यकता है।

(B) नैतिक मूल्य –

नैतिकता नीति शब्द से बना है जिसका अर्थ है प्रथाएं, लोकरीतियां या शिष्टाचार। बालक बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक समाज के नैतिक मूल्यों से परिचित होता रहता है। बालक में नैतिक मूल्यों के विकास के कारण ही विश्वास में दृढता और समझ में प्रखरता आती जाती है। इन्हीं मूल्यों के कारण वह विरोधी वस्तुओं व विचारों से घृणा तथा आदर्श वस्तुओं के प्रति जागरूक हो जाता है। एक बालक जो सत्य, ईमानदारी व आज्ञापालन का महत्व दैनिक, जीवन में समझता है तो वह निश्चित ही इन सामाजिक नैतिक गुणों का सम्मान करेगा।

(C) सह–शैक्षिक कार्यक्रम –

विद्यालय शिक्षण के साथ-साथ बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु सम्पन्न करवायी जाने वाली विभिन्न जीवनोपयोगी गतिविधियाँ जो बालकों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, सह-शैक्षिक गतिविधि या कार्यक्रम कहलाते हैं। एच.सी.मैक्नॉन के अनुसार, 'केवल पाठ्यसहायक क्रियाओं वाला स्कूल उतना ही नीरस होगा जितना उनके बिना एक स्कूल।'[12]

सहशैक्षिक कार्यक्रमों के लिए विद्या भारती की अभिनव पंचपदी शिक्षण पद्धति प्राचीन भारत की शिक्षण प्रणाली एवं आधुनिक युग की शिक्षण विधियों को अच्छी एवं उपयोगी बातों को लेकर विकसित की गई है। 1. अधीति, 2. बोध, 3. अभ्यास, 4. प्रयोग, 5. प्रसार (स्वाध्याय एवं प्रवचन) ये सीखने-सिखाने के मनोवैज्ञानिक क्रम हैं। इन पदों को सभी पाठ्य विषयों के शिक्षण हेतु सभी कक्षाओं के छात्रों के लिए अपनाया जा सकता है।

8. द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

(A) भारत में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

(B) विदेशों में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

भारत तथा विदेशों में हुए इस समस्या सम्बन्धित चरों पर हुए शोधों का पुनरावलोकन किया जायेगा ताकि चरों को ध्यान में रखकर शोध को उचित दिशा में कियान्वित किया जा सके।

[12] सचदेवा, डॉ. एम.एस. (2008) ''स्कूल प्रबन्ध'' भारत बुक सेंटर, लुधियाना पृ.सं.196

9. तृतीय अध्याय :– अध्ययन की विधि एवं उपकरण

9.1.1 शोध विधि :– अध्ययन की विधि एवं प्रविधि

शोध विधि वह मार्ग है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सकती है। प्रस्तुत शोध कार्य समूह पर आधारित है, अतः प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों, परिकल्पनाओं एवं विशेषताओं के दृष्टिकोण से शोधकर्ता द्वारा दत्त संकलन के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान की महत्वपूर्ण विधि **सर्वेक्षण विधि** का चयन किया गया।

9.1.2 न्यादर्श :–

अध्ययन के अंतर्गत बीकानेर संभाग के राजकीय एवं आदर्श विद्या मंदिर में अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया जाना प्रस्तावित है।

9.1.3 न्यादर्श चयन की विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य में ''स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श चयन'' विधि का प्रयोग किया जायेगा।

9.1.4 शोध उपकरण :–

क्र.सं.	उपकरण का नाम	निर्माणकर्त्ता
1.	व्यक्तित्व मापनी	डॉ.महेश भार्गव
2.	नैतिक मूल्य मापनी	अल्पना सेनगुप्ता एवं अरुण कुमार सिंह
3.	सहशैक्षिक कार्यक्रमों की मापनी	स्वनिर्मित

9.1.5 प्रयुक्त सांख्यिकी :–

(1) मध्यमान (Mean)

(2) मानक विचलन (S.D.)

(3) क्रान्तिक अनुपात (C.R.Value)

(4) सहसम्बन्ध (Cor-relation)

10. <u>चतुर्थ अध्याय</u> :- संमकों का सारणीय एवं विश्लेषण

8.4.1 दत्तों को सारणीयन

8.4.2 दत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों का उचित सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग से विश्लेषण कर उसकी व्याख्या की जायेगी।

11. <u>पंचम् अध्याय</u> :- सम्प्राप्ति, निष्कर्ष, सुझाव, पूर्व शोध निष्कर्ष एवं इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष संबंधी विवेचन एवं निर्देशन योजना :-

इस अध्याय के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य सम्पादित किये जाएगें -

(i) सम्प्राप्ति

(ii) निष्कर्ष

(iii) शैक्षिक उपयोगिता

(iv) पूर्व शोध निष्कर्ष एवं इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष संबंधी विवेचन

(v) सुझाव

(vi) निर्देशन योजना

12. <u>शोधकार्य में लगने वाला समय :-</u>

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :-

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	4 माह
2	द्वितीय अध्याय	4 माह
3	तृतीय अध्याय	3 माह
4	दत्त संकलन	6 माह
5	सारणीयन एवं विश्लेषण	4 माह
6	निष्कर्ष एवं सुझाव	1 माह
7	प्रतिवेदन लेखन कार्य	1 माह
8	टंकण कार्य एवं जिल्दसाजी कार्य	1 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

संदर्भ ग्रन्थ :

1. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश 2001 शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी 23, भगवान दास मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर, पृष्ठ संख्या – 43

2. अस्थाना, विपिन 1994 मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2 (उ.प्र.), पृष्ठ संख्या – 53

3. भार्गव, महेश 1993 आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन द्वितीय संस्करण, भार्गव बुक हाऊस, राजामण्डी, आगरा–2, पृष्ठ संख्या – 24

4. भार्गव, उषा 1993 किशोर मनोविज्ञान'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, पृ.सं. – 54, 55

5. भटनागर, ए.बी. भटनागर मीनाक्षी 2004 शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान'' आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ संख्या – 31, 54

6. भटनागर, आर.पी. 2003 शिक्षा अनुसंधान इन्टरनेशनल पब्लिशिग हाऊस, मेरठ–250001, पृ.स.120

7. भटनागर, सुरेश 1993 अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, चतुर्थ संस्करण

8. भटनागर सुरेश; वशिष्ठ कमला; सिंह एम.के. 1996 शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्यायें सूर्या पब्लिकेशन, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ संख्या – 38, 39

9. भटनागर, सुरेश 1997 शिक्षा मनोविज्ञान'' लॉयल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ संख्या 195-198

10. चौहान, आर.एस 2001 विकास के मनोवैज्ञानिक आधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा

11. सचदेवा, डॉ. एम.एस. 2008 ''स्कूल प्रबन्ध'' भारत बुक सेंटर, लुधियाना पृ.सं.196

पूराराम मेघवाल
शोधकर्ता

डॉ. अजयकृष्ण तिवाड़ी
शोध निर्देशक